

डॉ. डेव मैथ्यूसन, उनका आगमन कहां है?

सत्र 1, पारूसिया की समस्या, देरी और संभावित समाधान

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेविड मैथ्यूसन हैं जो अपने शिक्षण में कह रहे हैं कि उनका आगमन कहां है? सत्र 1, पारूसिया की समस्या, देरी और संभावित समाधान।

मैं डेव मैथ्यूसन हूँ, डेनवर, कोलोराडो में डेनवर सेमिनरी में न्यू टेस्टामेंट का एसोसिएट प्रोफेसर, जहाँ हम इसे फिल्मा रहे हैं। मेरी रुचि के क्षेत्रों में से एक है एस्केटोलॉजी, विशेष रूप से जैसा कि रहस्योद्घाटन की पुस्तक में देखा गया है।

मेरी सबसे हाल की किताबों में से एक, परलोक विद्या से संबंधित विषय पर थी, हालाँकि यह केवल प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से कहीं अधिक व्यापक है, और वह है पारूसिया की देरी, या यीशु मसीह के आने का मुद्दा। अगले कुछ व्याख्यानों में हम नए नियम में उस विषय पर विचार करना चाहते हैं और नए नियम पर ध्यान केंद्रित करते हुए, वह है पारूसिया की देरी, या मसीह के आने का मुद्दा। जब आप नया नियम पढ़ते हैं, तो आप पाते हैं, विशेष रूप से सुसमाचारों में, यीशु मसीह कई बार वादा करते हैं कि वह जल्द ही आएंगे।

आपको ऐसे कथन मिलते हैं जो यह सुझाव देते हैं कि यीशु ने सोचा था, या शायद सोचा था, कि वह वापस आएगा, जिसे धर्मशास्त्री कहते हैं, या व्यवस्थित धर्मशास्त्र की शब्दावली का उपयोग करते हुए, उसका दूसरा आगमन, कि यीशु दूसरी बार वापस आएगा, कभी भी अपने जीवनकाल में या यहाँ तक कि अपने शिष्यों और अनुयायियों के जीवनकाल में। यीशु ऐसी बातें कहते हैं जो आपको यह विश्वास दिलाती हैं कि पुराने नियम से वादा किया गया राज्य, परमेश्वर का राज्य जिसकी पुराने नियम के लेखक प्रतीक्षा कर रहे हैं, वह वास्तव में निकट था। और यीशु का इससे क्या मतलब था? अन्य नए नियम के लेखक भी देखेंगे और ऐसा लगता है कि वे सोचते हैं कि यीशु तुरंत वापस आ रहे हैं।

और वे ऐसी बातें कहते हैं जिससे आपको लगता है कि उन्होंने सोचा होगा कि यीशु उनके जीवनकाल में और उनके पाठकों के जीवनकाल में किसी समय अपने दूसरे आगमन पर वापस आएंगे। फिर भी वास्तविकता यह है कि यीशु वापस नहीं आए हैं। वे पहली सदी में वापस नहीं आए, वे दूसरी सदी में वापस नहीं आए, और अब, 21वीं सदी में भी, यीशु अभी तक वापस नहीं आए हैं।

तो, हम इसे कैसे समझा सकते हैं? या हम इसके बारे में कैसे सोचते हैं? जब बाइबल के लेखक कहते हैं कि यीशु जल्द ही वापस आ रहे हैं, तो वह कितनी जल्दी वापस आ रहे हैं? हमारे कई चर्च स्वीकारोक्ति, कुछ शुरुआती पंथ कथनों, प्रारंभिक स्वीकारोक्ति कथनों, जैसे कि प्रेरितों का पंथ, और हमारे कुछ प्राचीन पंथों में, एक कथन है कि उनका मानना है कि यीशु वापस आने वाले

हैं और वह अपना राज्य स्थापित करने जा रहे हैं, वह न्याय करने जा रहे हैं, पृथ्वी पर न्याय लाएंगे और अपने लोगों को उद्धार प्रदान करेंगे। और हमारे चर्चों में हमारे आधुनिक समय के सिद्धांत कथन, हालांकि वे अक्सर हमारे कुछ शुरुआती पंथों, जैसे कि प्रेरितों का पंथ, की तुलना में अधिक विस्तृत होते हैं, हमारे आधुनिक समय के चर्चों में हमारे कई सिद्धांत कथनों में मसीह के आने के बारे में एक कथन है, कि यीशु वापस आने वाले हैं और अपना राज्य स्थापित करने जा रहे हैं। अतः, इतिहास के अंत में मसीह का पुनः आगमन, जिसे धर्मशास्त्री प्रायः मसीह का दूसरा आगमन कहते हैं, उसके जन्म, मृत्यु और पुनरुत्थान के समय उसके प्रथम आगमन से भिन्न, मसीह का दूसरा आगमन हमारे आरंभिक धर्म-पंथों और हमारे आधुनिक समय के सैद्धांतिक वक्तव्यों में प्रमुखता से और बहुत महत्वपूर्ण रूप में दिखाई देता है।

अंत की यह उम्मीद, अंत के आने की, हमारे सैद्धांतिक कथनों में ही नहीं बल्कि बाइबल में भी और बाइबल के उन ग्रंथों में भी जो यह सुझाव देते हैं कि यीशु जल्द ही आ रहे हैं, ने मसीह के जल्द ही वापस आने की उम्मीदों को हवा दी है। आम तौर पर, जो होता है वह यह है कि हम अपने समय में चल रही वर्तमान घटनाओं को देखते हैं, और उन्हें बाइबल की भविष्यवाणियों और बाइबल के ग्रंथों से मिलाते हैं, और निष्कर्ष यह निकलता है कि हम पूर्णता के समय में रह रहे हैं। वे चीजें जो पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने देखी थीं, या यीशु ने भविष्यवाणी की थी, या यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में देखी थीं, अब पूरी होने वाली हैं।

और फिर, आमतौर पर, इसके बाद यह अनुमान लगाने का प्रयास किया जाता है कि हम अंत के कितने करीब हैं या इससे भी आगे जाकर तिथियाँ निर्धारित की जाती हैं। फिर भी, इन सभी प्रयासों में एक बात समान है। वे सभी विफल रहे हैं।

वे सभी असफल रहे हैं। चाहे तीसरी या चौथी सदी में या 15वीं या 16वीं सदी में या 20वीं सदी में और यहां तक कि 21वीं सदी में नए नियम की भविष्यवाणियों के आधार पर अंत की भविष्यवाणी करने के बहुत शुरुआती प्रयास हों कि मसीह वापस आ रहे हैं और शायद वे जल्द ही आ रहे हैं। इससे यह भविष्यवाणी होने लगी है कि यह कब होने वाला है।

लेकिन फिर भी, उन सभी में एक बात समान है। वे असफल हो गए हैं। और इस तरह समय आगे बढ़ता है, और 2,000 साल बाद, नए नियम के दस्तावेजों के लिखे जाने के लगभग 2,000 साल बाद, हम अभी भी यहाँ हैं।

और हम अभी भी उस अंत का इंतज़ार कर रहे हैं जो अभी तक नहीं आया है। यह सब वास्तव में नए नियम के दस्तावेजों से ही उपजा है। ऐसा लगता है कि नए नियम के लेखक खुद ही इस समस्या को पैदा करते हैं कि अंत अभी तक नहीं आया है।

जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, नए नियम के दस्तावेज़, सुसमाचारों में दर्ज यीशु की शिक्षाओं से शुरू होकर, भविष्यवाणी करते हैं या सुझाव देते हैं कि यीशु जल्द ही वापस आने वाले हैं। वे ऐसे बयान देते हैं जो यह सुझाव देते हैं कि यीशु पाठकों के जीवनकाल में और यीशु या नए नियम के लेखकों के जीवनकाल में वापस आ रहे हैं। बाइबिल के पाठ स्वयं एक ऐसे अंत की उम्मीद के संकट को पैदा करते हैं जो अभी तक नहीं आया है।

इसके साथ समस्या और जिस समस्या को हम संबोधित करना चाहते हैं, या जिस कारण से हम इस समस्या को संबोधित करना चाहते हैं, वह है अंत की यह समस्या जो अभी तक नहीं आई है, नए नियम के लेखकों और यीशु द्वारा अंत की भविष्यवाणी करने की यह समस्या, मसीह की जल्द वापसी जो अब लगभग 2,000 साल बाद भी घटित नहीं हुई है, ने कई लोगों के जीवन में आस्था का संकट शुरू किया है या बनाया है। बहुत से लोग जो इन ग्रंथों को पढ़ते हैं और देखते हैं कि नए नियम के लेखक और यीशु ने अंत की भविष्यवाणी की है जो अभी तक नहीं आई है, अक्सर बाइबल पर प्रतिक्रिया देते हैं और इसे अत्यधिक संदेह के साथ देखते हैं। निश्चित रूप से, यदि यीशु ने इस पर गलत कहा, और नए नियम के लेखक इस तरह की किसी चीज़ पर गलत थे, तो हम वास्तव में उनकी बाकी बातों पर ज़्यादा भरोसा नहीं कर सकते।

यदि यीशु ने सोचा कि वह जल्द ही वापस आ जाएगा और उसने सोचा कि वह अपने अनुयायियों के जीवनकाल में वापस आ जाएगा, लेकिन फिर गलत था, या यदि प्रेरित पौलुस ने सोचा कि मसीह उसके जीवनकाल और उसके पाठकों के जीवनकाल में वापस आने वाला है, और फिर गलत था, या याकूब या प्रकाशितवाक्य के लेखक, यूहन्ना ने सोचा कि मसीह जल्द ही वापस आने वाला है, लेकिन वह नहीं आया, और वे गलत थे, तो यह पवित्रशास्त्र की शिक्षा की विश्वसनीयता के बारे में क्या कहता है? यदि वे इस मामले में गलत थे, तो यह यीशु की शिक्षा की विश्वसनीयता के बारे में क्या कहता है? मैं ऐसे कई लोगों को जानता हूँ जिन्होंने अपने विश्वास पर सवाल उठाया है। मैं कुछ ऐसे लोगों को भी जानता हूँ जिन्होंने इस मुद्दे पर अकेले अपने विश्वास को त्याग दिया है। यदि यीशु और नए नियम के लेखक गलत थे, तो निश्चित रूप से, हम पवित्रशास्त्र पर भरोसा नहीं कर सकते।

जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, कुछ ग्रंथों का नमूना लेने के लिए, नए नियम के लेखक और विशेष रूप से सुसमाचार, ऐसे कथन देते हैं जो आपको यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि यीशु तुरंत वापस आ रहे होंगे और ऐसे कथन देते हैं जो संभवतः ईसाई धर्म की पहली शताब्दी में पहले लेखकों और पहले पाठकों को यह सोचने पर मजबूर करते होंगे कि यीशु तुरंत वापस आ रहे हैं। उदाहरण के लिए, यीशु के मंत्रालय की शुरुआत में, तीनों समकालिक सुसमाचारों, मत्ती, मरकुस और लूका में, यीशु मरकुस 1:15, मत्ती 4:17 और लूका 4:43 में एक कथन देते हैं, यीशु के वयस्क मंत्रालय की शुरुआत में, वे एक कथन देते हैं, समय आ गया है, यीशु ने कहा, परमेश्वर का राज्य निकट है, पश्चाताप करो और अच्छी खबर पर विश्वास करो। किस अर्थ में परमेश्वर का राज्य निकट है? किस अर्थ में यह निकट था? पहले पाठकों के लिए, क्या यीशु दुनिया के अंत की भविष्यवाणी कर रहे थे, लेकिन फिर यह कभी नहीं हुआ? या इस तरह के कथनों के बारे में क्या: मरकुस 9:1, मत्ती 16:28, और लूका 9:27 में, यीशु कहते हैं, तुममें से जो यहाँ खड़े हैं, वे तब तक नहीं मरेंगे जब तक तुम परमेश्वर के राज्य को सामर्थ्य और महिमा के साथ आते हुए न देख लो।

फिर से, ऐसा लगता है कि यीशु ने सोचा था कि उसके कुछ अनुयायियों के मरने से पहले उसका अंतिम समय का राज्य आ जाएगा, फिर भी वे सभी मर गए। और जाहिर है, यीशु का राज्य, वह राज्य जिसके बारे में पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने भविष्यवाणी की थी कि वह आएगा, कभी नहीं आया, और लगभग 2,000 साल बाद, यह अभी भी नहीं आया है। मार्क 13:30, मैथ्यू 24:34, और ल्यूक 21:31 में अन्य उदाहरण यीशु के तथाकथित युगांत संबंधी प्रवचन, या जैतून के प्रवचन में हैं। हम बाद में उस पर गौर करेंगे। यीशु ने यह कथन दिया कि यह पीढ़ी तब तक नहीं गुजरेगी

जब तक कि ये सभी चीजें नहीं हो जातीं, यीशु द्वारा अपनी वापसी और आने वाले राज्य के बारे में बात करने के संदर्भ में।

फिर से, इस पीढ़ी को, हमें इसे कैसे समझना चाहिए? शायद, मुझे लगता है, यीशु अपने समकालीनों, अपने अनुयायियों, अपने शिष्यों और उन लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जो उन्हें सुन रहे थे। फिर भी, वे गुजर गए, और मसीह का राज्य पृथ्वी पर नहीं आया। दुनिया का अंत नहीं हुआ।

लेकिन, सुसमाचारों से बाहर निकलते हुए, हम नए नियम में अन्य स्थानों पर भी कुछ ऐसा ही कहते हुए पाते हैं, और वैसे, हम इन अंशों से इस प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश करेंगे कि हमें इन्हें कैसे समझना चाहिए? क्या यीशु और नए नियम के लेखक एक ऐसे अंत की भविष्यवाणी कर रहे थे जो नहीं आया, और वे बस गलत और भूले हुए थे? लेकिन, 1 कुरिन्थियों 7:29 में, पॉल यह कथन करता है: समय कम है। जैसा कि हम देखेंगे, वह उन लोगों को प्रोत्साहित करता है जो अविवाहित हैं कि वे अविवाहित ही रहें क्योंकि समय कम है। निश्चित रूप से, पॉल ने सोचा कि यीशु के लौटने से पहले ज़्यादा समय नहीं बचा था।

क्या पॉल गलत था? या, 1 थिस्सलुनीकियों 4.15-17 जैसे पाठ के बारे में क्या, वह प्रसिद्ध अंश जिसे अक्सर अंतिम संस्कारों में पढ़ा जाता है, जहाँ पॉल हमें बताता है कि जो लोग मर चुके हैं उन्हें पहले उठाया जाएगा, और फिर वह कहता है, हम, प्रथम-व्यक्ति बहुवचन का उपयोग करते हुए, हम जो जीवित हैं, हवा में प्रभु से मिलने के लिए उठाए जाएंगे, जो यीशु के दूसरे आगमन का स्पष्ट संदर्भ है। उद्धार और न्याय लाने के लिए इतिहास के अंत में उनका आगमन, इतिहास को उसके समापन पर लाना। पॉल, हम का उपयोग करके, खुद को उन लोगों में शामिल करता है जो उस घटना के होने पर जीवित होंगे, फिर भी पॉल मर जाता है और दृश्य से चला जाता है, और वह आगमन कभी नहीं हुआ।

या फिर याकूब 5:7 जैसे पाठ के बारे में क्या? याकूब अपने पाठकों से कहता है कि धैर्य रखें, क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है। वह कहता है कि न्यायाधीश द्वार पर खड़ा है। फिर भी, याकूब और संभवतः पहली सदी के उसके पाठक प्रभु के आगमन को देखे बिना ही गुजर गए।

या, 1 पतरस 4:7. पतरस कहता है, सब बातों का अंत निकट है। सब बातों का अंत। अच्छा, कितना निकट? फिर से, पतरस मर गया, हम जानते हैं, और संभवतः, उसके सभी पाठक मसीह के आगमन को देखे बिना ही वहाँ से चले गए।

बाइबल की सबसे आखिरी किताब, प्रकाशितवाक्य की ओर बढ़ते हुए। प्रकाशितवाक्य के अध्याय 1, श्लोक 1 और श्लोक 3 में, और अध्याय 22 में, किताब के सबसे आखिरी अध्याय, अध्याय 22 और श्लोक 6, 10 और 20 में, यूहन्ना हमें बताता है कि कुछ घटनाएँ निकट हैं। कुछ घटनाएँ निकट ही हैं।

और हम उसे यह कहते हुए भी देखते हैं, मसीह जल्द ही आ रहा है। मसीह खुद प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अंत में बोलते हैं और कहते हैं, मैं जल्द ही आ रहा हूँ। फिर भी, 2,000 साल बाद, वह वापस नहीं आया है।

और फिर, जॉन और उसके पाठक संभवतः उस दृश्य से गुज़र चुके हैं। और अब, 2,000 साल बाद, हम अभी भी इंतज़ार कर रहे हैं। फिर से, यह तनाव, यह मुद्दा है, जिसने कई लोगों में आस्था का संकट पैदा कर दिया है।

एक बार फिर, ऐसा संकट, जिसे नए नियम के पाठ स्वयं ही पैदा करते हैं। और फिर, कुछ ईसाइयों के लिए, यह तनाव सहन करना बहुत मुश्किल है। और कई लोग अपने विश्वास से विमुख हो जाते हैं।

बहुत से लोग अपने विश्वास से विमुख हो जाते हैं। बहुत से लोग इसे त्याग देते हैं या कम से कम इस पर गंभीरता से सवाल उठाते हैं। क्योंकि हमने अभी जो कुछ देखा और पढ़ा है, उनमें से कुछ के बीच सामंजस्य स्थापित करने में असमर्थता है।

और उन्हें गुणा किया जा सकता है। हम अन्य भी खोज सकते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि ये कुछ प्रमुख हैं।

और यह समझने में उनकी असमर्थता कि नए नियम के लेखक और यीशु पहली सदी में अपनी वापसी की भविष्यवाणी कैसे करते हैं। और 2,000 साल बाद, हम अभी भी इंतज़ार कर रहे हैं। इस मुद्दे और इन नए नियम के ग्रंथों को संभालने के लिए कई प्रयास किए गए हैं।

और मैं इनमें से कुछ का पता लगाना चाहता हूँ ताकि हम इस मुद्दे को कैसे संबोधित करने जा रहे हैं, इसके लिए रास्ता तैयार कर सकें और परिदृश्य तैयार कर सकें। लेकिन इन ग्रंथों से निपटने के कई तरीके हैं। और मैंने ये सब चर्च में सुना है।

मैंने बार्न्स एंड नोबल जैसी हमारी किताबों की दुकानों की किताबों की अलमारियों पर ये सब देखा है। ये सभी इस मुद्दे का उत्तर देने और उससे निपटने के प्रमुख और लोकप्रिय तरीके हैं कि कैसे कुछ नए नियम के पाठ और यीशु की शिक्षाएँ मसीह की आसन्न वापसी की भविष्यवाणी करती हैं। पहली सदी में मसीह का आगमन।

यीशु और प्रेरितों, उनके पाठकों, उनके श्रोताओं और पहली सदी के आरंभिक मसीहियों के जीवनकाल में, फिर भी ऐसा नहीं हुआ। वे इससे कैसे निपटते हैं? एक तरीका जो हम पहले ही देख चुके हैं, वह यह है कि, कई लोगों के लिए, यह तनाव सहन करने के लिए बहुत ज़्यादा है।

वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि धर्मग्रंथ गलत होना चाहिए, कि यीशु गलत थे, और कि प्रेरित गलत थे। तो, हम ईसाई धर्म पर कैसे भरोसा कर सकते हैं? क्या ईसाई धर्म की यह बात सिर्फ़ एक बड़ा मज़ाक नहीं है? अगर वे इस तरह की किसी चीज़ में गलत हैं? इस सवाल से निपटने का दूसरा तरीका है कि समस्या को अनदेखा कर दिया जाए। बहुत से ईसाई हैं, लेकिन उनमें से कुछ को समस्या के बारे में पता नहीं है।

लेकिन बहुत से लोग इसे अनदेखा करना और इससे निपटने से इनकार करना पसंद करते हैं और खुद को अन्य चीजों में व्यस्त रखते हैं या एक बड़ा व्यापक बयान देते हैं कि अंत में सब ठीक हो जाएगा। और बस इस मुद्दे को दबा देते हैं और इससे निपटने से इनकार करते हैं। लेकिन फिर भी यह खत्म नहीं होता।

हमारे पास अभी भी वे अंश हैं जिन्हें हमने अभी पढ़ा है जो मसीह के अपने जीवनकाल में, पाठकों और पहली सदी के जीवनकाल के प्रेरितों के भीतर जल्द ही वापसी की भविष्यवाणी करते प्रतीत होते हैं। फिर भी ऐसा कभी नहीं हुआ। इससे निपटने का तीसरा तरीका एक दृष्टिकोण है जिसे मैं असफल भविष्यवाणी दृष्टिकोण कहता हूँ।

जैसा कि इस नाम से पता चलता है, यीशु और प्रेरित गलत थे। जब यीशु ने भविष्यवाणी की कि परमेश्वर का राज्य निकट है, वह अंतिम समय का राज्य जिसकी भविष्यवाणी पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने की थी, तो वह बस गलत था क्योंकि यह कभी साकार नहीं हुआ। जब यीशु ने कहा कि तुममें से कुछ लोग जो यहाँ खड़े हैं, तब तक नहीं मरेंगे जब तक तुम परमेश्वर के राज्य को शक्ति और महान महिमा के साथ आते नहीं देखते, तो वह गलत था।

जब पॉल ने सोचा कि जब यीशु मसीह पारूसिया में वापस आएगा तो वह जीवित हो सकता है, कि वह उन लोगों के साथ होगा जो हवा में प्रभु से मिलने के लिए उठाए जाएंगे, तो वह पूरी तरह से गलत था। जब पॉल ने सोचा कि समय कम है, तो वह एक भविष्यवाणी कर रहा था जो गलत साबित हुई। आखिरकार, वे सिर्फ इंसान हैं, इसलिए निश्चित रूप से, वे यह नहीं जान सकते थे कि अंत कब होगा।

यह दृष्टिकोण सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से एक प्रसिद्ध न्यू टेस्टामेंट विद्वान, अल्बर्ट श्वित्ज़र नामक एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्री से जुड़ा हुआ है। अल्बर्ट श्वित्ज़र ने यीशु को एक सर्वनाशकारी उपदेशक के रूप में देखा, जिसने भविष्यवाणी की थी, जैसा कि हम आज पाते हैं, जैसा कि 21वीं सदी में भी भविष्यवाणी करने वाले गुरु दुनिया के अंत की भविष्यवाणी कर रहे हैं, फिर भी यह कभी नहीं होता। यही यीशु कर रहे थे।

यीशु ने सोचा था कि अपने मंत्रालय और उपदेश के माध्यम से, वह दुनिया का अंत कर देगा, और दुनिया का अंत आ जाएगा, फिर भी ऐसा कभी नहीं हुआ, और यीशु गलत थे; यीशु गलत थे, और इसके बजाय, उन्हें उनकी शिक्षा और उनके विश्वास के लिए क्रूस पर मौत की सज़ा दी गई। एक और आधुनिक समय का उदाहरण बार्ट एहरमन नामक एक प्रसिद्ध व्यक्ति के कुछ लेखन हैं। आपको बार्न्स एंड नोबल बुकस्टोर और अन्य बुकस्टोर्स में उनके बहुत से काम, लोकप्रिय-स्तर के काम मिल जाएँगे।

बार्ट एहरमन ने भी यीशु को एक सर्वनाशकारी प्रकार के उपदेशक के रूप में देखा। फिर से, यीशु ने केवल भविष्य की भविष्यवाणी की और गलत और गलत साबित हुआ। फिर से, हमारे आधुनिक समय के कई भविष्यवाणी प्रचारकों की तरह जो अंत समय की भविष्यवाणी करते हैं और एक तिथि निर्धारित करते हैं, वह कभी नहीं होता है।

इसलिए, इस दृष्टिकोण के तहत, असफल भविष्यवाणी दृष्टिकोण, यीशु केवल एक सर्वनाशकारी प्रकार का उपदेशक है जो अंत का उपदेश दे रहा है, उसने सोचा कि अंत उसके जीवनकाल में आएगा, लेकिन वह गलत था और उसे क्रूस पर लटका दिया गया और इसके लिए उसे मौत की सज़ा दी गई। यह दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से इस बात से इनकार करता है कि एक ईश्वर है जो सभी चीजों को जानता है और एक ईश्वर जो इतिहास में हस्तक्षेप कर सकता है और उसका आगमन ला सकता है। यह इस बात से इनकार करता है कि यीशु स्वयं ईश्वर है और उसे केवल एक इंसान के रूप में चित्रित करता है जो दुनिया के अंत की अपनी भविष्यवाणी में गलत था।

तो जाहिर है कि इस तरह का दृष्टिकोण उन लोगों को पसंद नहीं आएगा जो शास्त्र को ईश्वर के वचन के रूप में उच्च दृष्टिकोण से देखते हैं, जो एक ऐसे ईश्वर में विश्वास करते हैं जिसने सभी चीजों को बनाया है, जो सभी चीजों को जानता है, जो दुनिया में हस्तक्षेप करता है, और जो इतिहास को उसके लक्ष्य और परिणति तक लाने के लिए अंत में ऐसा करेगा। जो लोग मानते हैं कि यीशु स्वयं ईश्वर हैं, उनके लिए यह दृष्टिकोण अच्छा नहीं होगा। मुझे लगता है कि सबूतों को देखने का एक बेहतर तरीका है।

एक और दृष्टिकोण, चौथा दृष्टिकोण, जिसे मैं ई. 70 दृष्टिकोण कहता हूँ। अगर आपको याद हो, तो ई. 70 में जो हुआ वह एक बहुत ही उथल-पुथल वाली घटना थी और पहली सदी के ईसाई धर्म और पहली सदी के यहूदी धर्म में एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना थी। वह ई. 70 में रोमनों द्वारा यरूशलेम और मंदिर का विनाश था।

यह दृष्टिकोण कहता है कि इनमें से अधिकांश पाठ, विशेष रूप से सुसमाचारों में, लेकिन कुछ अन्य पाठ भी, जैसे कि पौलुस के पत्रों में और याकूब में और यहाँ तक कि प्रकाशितवाक्य में, सुसमाचारों में यीशु के कुछ पत्र या दस्तावेज या कथन जो मसीह के शीघ्र आगमन की आशा करते प्रतीत होते हैं, वास्तव में मसीह के शीघ्र आगमन की आशा करते हैं, लेकिन यीशु जो भविष्यवाणी कर रहे हैं वह इतिहास के अंत में उनका दूसरा आगमन नहीं है, बल्कि एक निकट आगमन है, यरूशलेम पर न्याय करने और उसके मंदिर पर न्याय करने के लिए न्याय में आना, जो वास्तव में 70 ई. में हुआ था जब रोमनों ने आक्रमण किया और यरूशलेम पर कब्जा कर लिया और मंदिर को नष्ट कर दिया, ई. 70। इस तरह, वे निकट और शीघ्र की इस भाषा को समझते हैं। मसीह का आगमन निकट और शीघ्र कैसे हो सकता है यदि यह इतिहास के अंत में दूसरे आगमन का उल्लेख कर रहा है जो कम से कम 2,000 वर्ष, नए नियम के लेखन के लगभग 2,000 वर्ष बाद भी नहीं हुआ है? इसके बजाय, वे शीघ्रता और निकटता की भाषा को शाब्दिक और गंभीरता से लेते हैं और कहते हैं, यीशु का आगमन शीघ्र होने वाला है।

यीशु का आगमन निकट था, लेकिन इसका मतलब इतिहास के अंत में उनका दूसरा आगमन नहीं है। यह एक निकट आगमन है, एक निकट आगमन है, 70 ई. में यरूशलेम पर न्याय के लिए उनका आगमन। इस दृष्टिकोण के सबसे प्रसिद्ध अधिवक्ताओं में से एक एन.टी. राइट हैं।

उन्होंने इस पर काफी कुछ लिखा है और यीशु की शिक्षा को, खास तौर पर दूसरे आगमन के इतिहास के अंत में उनके आगमन की भविष्यवाणी के रूप में नहीं देखते हैं। ऐसा नहीं है कि एनटी राइट इस पर विश्वास नहीं करते और उन्हें नहीं लगता कि ऐसा होने वाला है। उन्हें बस यह

नहीं लगता कि यीशु इसी बारे में बात कर रहे हैं जब वह अपनी जल्द वापसी, अपने आगमन, अपने पाठकों के जीवनकाल में आने वाले अपने पारुसिया की आशा करते हैं।

वास्तव में, नए नियम के पाठकों ने इस घटना को देखा था। उनमें से अधिकांश ने तब देखा था जब ईसा मसीह 70 ई. में यरूशलेम पर न्याय करने के लिए लौटे थे। निश्चित रूप से, यदि आप पवित्रशास्त्र के बारे में उच्च दृष्टिकोण रखते हैं, जहाँ आप सोचते हैं कि यह बाइबल ईश्वर का आधिकारिक वचन है और एक ईश्वर है जिसने सभी चीजों को बनाया है, जो सभी चीजों को जानता है, जो इतिहास में हस्तक्षेप कर सकता है, तो यह दृष्टिकोण निश्चित रूप से विफल भविष्यवाणी के दृष्टिकोण से बेहतर है जहाँ ईसा मसीह केवल दुनिया के अंत की भविष्यवाणी कर रहे थे और वह गलत और भ्रामक थे।

मैं सुझाव देना चाहूँगा कि हम देखेंगे कि वास्तव में ऐसे कई ग्रंथ हैं जहाँ यीशु और नए नियम के लेखक 70 ई. में यरूशलेम के विनाश के मुद्दे को संबोधित कर रहे हैं। मेरा सवाल यह है कि क्या यह सभी ग्रंथों के लिए जिम्मेदार है। हम बाद में उनमें से कुछ ग्रंथों को देखेंगे।

पाँचवाँ दृष्टिकोण वह है जिसे शास्त्रीय व्यवस्थावादी दृष्टिकोण कहा जा सकता है। शास्त्रीय व्यवस्थावादी दृष्टिकोण, थोड़ा सा समर्थन करने के लिए, शास्त्रीय व्यवस्थावाद ने पूरे इतिहास में अलग-अलग तरीकों से समय की विशिष्ट अवधि में ईश्वर को काम करते देखा। यह एक ही ईश्वर था, लेकिन ईश्वर ने अलग-अलग समय, अलग-अलग व्यवस्थाओं में अलग-अलग तरीकों से काम किया।

व्यवस्था का एक ऐसा प्रबंध था जहाँ परमेश्वर ने परमेश्वर की व्यवस्था से निपटा। परमेश्वर ने इस्राएल के साथ पुरानी वाचा और व्यवस्था के तहत व्यवहार किया। अब, हम कलीसिया के प्रबंध के अधीन हैं।

भविष्य में सहस्राब्दी राज्य का एक प्रबंध होगा। डिस्पेंसेशनलिज़्म ने पूरे इतिहास में अलग-अलग समय के दौरान परमेश्वर को अलग-अलग तरीकों से काम करते हुए देखा। शास्त्रीय डिस्पेंसेशनलिज़्म जिस चीज़ के लिए जाना जाता था, वह इतिहास के अलग-अलग समय में परमेश्वर के अलग-अलग तरीकों से काम करने के विचार के अनुरूप एक अंतर है, जिस तरह से परमेश्वर अपने लोगों, इस्राएल के साथ व्यवहार करता था, और जिस तरह से परमेश्वर चर्च के साथ व्यवहार करता था, उसके बीच एक अंतर।

परमेश्वर के पास इस्राएल को दिए गए वादों का एक समूह था। परमेश्वर के पास वादों का एक अलग समूह है जो वह अब कलीसिया को देता है। इस्राएल के लिए उसका एक उद्देश्य था, और अब कलीसिया के लिए उसका एक अलग उद्देश्य है।

इसे समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पुराने नियम के सभी भविष्यवाणियों में एक आने वाले राज्य की भविष्यवाणी की गई थी, जहाँ दाऊद के वंश में एक पुत्र, यीशु मसीह, सिंहासन पर बैठेगा और पूरी पृथ्वी पर अपना राज्य स्थापित करेगा, और वह इस्राएल को अपने लोगों के रूप में, अपने राष्ट्र के रूप में पुनर्स्थापित करेगा। वह उन पर शासन करेगा और एक

नई वाचा स्थापित करेगा। पुराने नियम में जिन चीज़ों का वादा किया गया था, शास्त्रीय युगवाद कहता है, वही यीशु ने पेश किया था।

यीशु ने सोचा था कि पुराने नियम में वादा किया गया राज्य उसके जीवनकाल में आएगा। समस्या यह थी कि इस्राएल ने इसे अस्वीकार कर दिया था। इसलिए, यीशु ने राज्य के वादे को भविष्य के समय तक टाल दिया, और इसके बजाय, उसने चर्च की अवधि की स्थापना की, जहाँ उसने लोगों को इकट्ठा किया और सभी राष्ट्रों, यहूदियों और गैर-यहूदियों से बने अपने चर्च के रूप में लोगों को इकट्ठा किया, जिन्होंने विश्वास में यीशु मसीह का जवाब दिया।

एक बार जब चर्च की अवधि समाप्त हो गई, तो परमेश्वर एक बार फिर से इस्राएल को वह राज्य प्रदान करेगा। इसलिए वही राज्य जिसे यीशु सुसमाचारों में दे रहा है जिसे इस्राएल ने अस्वीकार कर दिया था, उसने भविष्य के दिन तक के लिए टाल दिया जो अभी तक नहीं आया है, कम से कम लगभग 2,000 साल बाद। लेकिन एक दिन, परमेश्वर यीशु मसीह के माध्यम से फिर से वह राज्य प्रदान करेगा, और इस्राएल इसे स्वीकार करेगा।

परमेश्वर अपना राज्य स्थापित करेगा। दाऊद का पुत्र, यीशु मसीह, इस्राएल पर शासन करेगा, और फिर उसके साथ एक नई वाचा स्थापित की जाएगी। अब इसका क्या मतलब है, सुसमाचारों में वे पाठ जहाँ यीशु कहते हैं, परमेश्वर का राज्य निकट है।

यहाँ खड़े तुममें से बहुत से लोग तब तक मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे जब तक तुम परमेश्वर के राज्य को बड़ी महिमा के साथ आते हुए नहीं देखोगे। ये सारी चीज़ें इस पीढ़ी में तब तक नहीं टलेंगी जब तक तुम ये सारी चीज़ें टलती हुई नहीं देखोगे। यीशु ने ऐसा क्यों कहा? क्योंकि वह वास्तव में राज्य की पेशकश कर रहा था।

यदि इस्राएल ने संभवतः इसे स्वीकार कर लिया होता, तो यीशु ने अपना राज्य स्थापित कर लिया होता। वे वादे हकीकत बन गए होते। लेकिन क्योंकि इस्राएल ने इसे अस्वीकार कर दिया, इसलिए यीशु ने इसे स्थगित कर दिया, प्रस्ताव वापस ले लिया, और इसे भविष्य के दिन तक के लिए टाल दिया।

और उस समय के बीच अब चर्च का समय है, वह समय जिसमें हम अभी भी रह रहे हैं। अब, कुछ अन्य नए नियम के पाठों में, जब पॉल कहता है, हम जो जीवित हैं और बचे रहेंगे, हवा में प्रभु से मिलने के लिए उठाए जाएँगे। जब जेम्स कहता है, धीरज रखो क्योंकि प्रभु का आगमन निकट है।

या जब 1 पतरस 4:7 कहता है, सब बातों का अंत निकट है। या जब पौलुस कहता है कि समय कम है। वे किसी दूसरी घटना का उल्लेख कर रहे हैं।

वे चर्च के उत्थान के नाम से जानी जाने वाली घटना का उल्लेख कर रहे हैं। यानी, इससे पहले कि यीशु अपना प्रस्ताव दोहराए और वह वादा फिर से पेश करे जिसे करने में उसने देरी की थी, परमेश्वर चर्च के लोगों को उठा लेगा। फिर, यह प्रस्ताव एक बार फिर इस्राएल के सामने रखा जाएगा।

तो फिर, सबसे पहले पहली सदी में प्रारंभिक प्रस्ताव आता है, परमेश्वर के राज्य का एक सच्चा, वास्तविक प्रस्ताव जिसे इस्राएल ने अस्वीकार कर दिया। इसे भविष्य के लिए टाल दिया गया। इस बीच, परमेश्वर ने यहूदी और गैर-यहूदी लोगों से बने लोगों, चर्च का निर्माण किया, जिसे वह एक दिन स्वर्गारोहित कर देगा, इससे पहले कि वह इस्राएल को फिर से राज्य प्रदान करे, इससे पहले कि वह भविष्यवाणी की घड़ी को फिर से शुरू करे और इस्राएल के साथ फिर से व्यवहार करना शुरू करे।

इसलिए, शास्त्रीय युगवाद इस मुद्दे से निपटता है और कहता है कि दो अलग-अलग आगमन हैं। एक है भविष्य में मसीह का दूसरा आगमन, जो पहली सदी में हुआ होगा, लेकिन इसमें देरी हुई क्योंकि उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया। दूसरा एक ऐसा उत्साह है जो चर्च, यहूदियों और अन्यजातियों के लिए है।

इस दृष्टिकोण के कुछ प्रसिद्ध समर्थक पुरानी स्कोफील्ड स्टडी बाइबल होगी जिससे आप में से कुछ परिचित हो सकते हैं, या रायरी स्टडी बाइबल, या जॉन वाल्वोर्ड और कुछ पुराने डिस्पेंसेशनल विद्वानों और लेखकों के लेखन जिन्होंने इस तरह के दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया। हालाँकि यह सुसमाचारों में से कुछ उन ग्रंथों की समस्या को हल करता है जो यीशु और पाठकों के जीवनकाल में आने वाले राज्य की भविष्यवाणी करते प्रतीत होते हैं। यह यह कहकर उस समस्या को हल करता है कि इस्राएल ने इसे अस्वीकार कर दिया, इसलिए भगवान को इसे भविष्य में विलंबित करना पड़ा।

यह अभी भी उन ग्रंथों के साथ संघर्ष करता है जिन्हें वे तथाकथित रैप्चर के लिए निर्दिष्ट करते हैं। यदि पॉल कहता है कि समय कम है, या यदि वह कहता है कि हम जो जीवित हैं, जो हवा में प्रभु से मिलने के लिए उठाए गए हैं, तो आपको अभी भी इस बात से निपटना होगा कि पॉल ने कैसे सोचा था कि रैप्चर उसके जीवनकाल में होने वाला था। या पीटर कैसे आश्चर्य था कि सभी चीजों का अंत निकट था, अगर वह रैप्चर का जिक्र कर रहा है ?

इसलिए, ऐसा लगता है कि शास्त्रीय व्यवस्थावादी दृष्टिकोण ने कुछ ग्रंथों से निपटा है, लेकिन अन्य ग्रंथों को वे रैप्चर मार्ग के लिए निर्दिष्ट करते हैं जिसका हम चर्च के रूप में इंतजार करते हैं, फिर भी एक समस्या पैदा करते हैं। इस तथ्य के अलावा कि हम इसे बाद में देखेंगे, मुझे विश्वास नहीं है कि रैप्चर और मसीह के दूसरे आगमन को अलग करना चाहिए। मैं बाद में सुझाव दूंगा कि मसीह का एक आगमन है। मुझे लगता है कि नया नियम दो नहीं, बल्कि रैप्चर और दूसरे आगमन की प्रतीक्षा करता है।

इसलिए, मुझे नहीं पता कि हमारे बहुत से चर्चों में शास्त्रीय व्यवस्था संबंधी दृष्टिकोण बहुत लोकप्रिय है, हालाँकि इसे शायद उस नाम से नहीं जाना जाता। मुझे यकीन नहीं है कि यह समस्या को हल करने में मदद करता है। एक छठा दृष्टिकोण और अंतिम दृष्टिकोण है जिस पर मैं संक्षेप में विचार करना चाहता हूँ, और इसे सशर्त भविष्यवाणी दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है।

हाल ही में एक किताब आई थी जो कुछ साल पहले ही क्रिस्टोफर हेस नामक विद्वान द्वारा संपादित की गई थी। इसका शीर्षक था जब मनुष्य का पुत्र नहीं आया। और यह इस मुद्दे की एक लंबी जांच थी।

जहाँ तक मुझे पता है, मसीह के आने में देरी के इस मुद्दे पर पहली विस्तृत पुस्तक-लंबाई का उपचार। मसीह का आगमन क्यों नहीं हुआ, जबकि पहली सदी के लेखकों, नए नियम के लेखकों और यीशु की अपनी शिक्षाओं से ऐसा लगता है कि ऐसा होगा? बाइबल के ग्रंथों, ईश्वर के चरित्र और उसकी संप्रभुता से संबंधित दार्शनिक मुद्दों और धार्मिक मुद्दों से निपटने वाले विभिन्न प्रकार के निबंधों में, मूल रूप से, पुस्तक यह तर्क दे रही थी कि नए नियम के लेखकों और यीशु ने अपने जीवनकाल में मसीह के शीघ्र वापस आने की भविष्यवाणी की थी।

लेकिन यह भविष्यवाणी दर्शकों की प्रतिक्रिया पर आधारित थी। शास्त्रीय व्यवस्था संबंधी दृष्टिकोण की तरह, मसीह के आगमन की वास्तव में पहली शताब्दी में ही पेशकश की गई थी, और यह घटित भी होता, फिर भी समस्या यह थी कि पर्याप्त लोगों ने प्रतिक्रिया नहीं दी और पश्चाताप नहीं किया। लोगों ने पश्चाताप नहीं किया।

लोगों ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। इसलिए, प्रस्ताव में देरी हुई और लगातार देरी हो रही है जब तक कि पर्याप्त लोग पश्चाताप और मसीह और सुसमाचार पर विश्वास करके प्रतिक्रिया नहीं देते। तभी ये वादे पूरे होंगे।

तो, यह एक वास्तविक प्रस्ताव था। यह एक वास्तविक भविष्यवाणी थी कि यीशु पहली सदी में वापस आने वाले थे। एकमात्र मुद्दा यह था कि यह लोगों पर विश्वास और आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया करने की शर्त पर था क्योंकि उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया था, क्योंकि उन्होंने प्रतिक्रिया नहीं दी थी।

यीशु के दिनों में और पहली सदी में, और संभवतः आज भी, मसीह के आने में देरी हो रही है, जिससे लोगों को पश्चाताप करने का मौका मिल रहा है और लोगों को सुसमाचार का जवाब देने का मौका मिल रहा है। यह दृष्टिकोण 2 पतरस 3 पर बहुत अधिक जोर देता है, जहाँ पतरस खुद सुझाव देता है कि मसीह के अभी तक वापस न आने का कारण लोगों को पश्चाताप करने का मौका देना है। तो ये कुछ प्रमुख दृष्टिकोण हैं।

हम शायद दूसरों के बारे में सोच सकते हैं, और उनमें से कुछ विचारों के अंदर, शायद कुछ भिन्नता है। फिर भी, हम यहाँ से कहाँ जाएँगे? यदि उनमें से कोई भी विचार अपने आप में पूरी तरह से पर्याप्त नहीं है, या उनमें से एक या दो अधिकतर गलत हैं, तो हम यहाँ से कहाँ जाएँगे? मैं एक स्पष्टीकरण प्रस्तावित करना चाहूँगा जो इन व्याख्यानों के शेष भाग में काम आएगा। एक स्पष्टीकरण जो आसन्नता पर नए नियम की शिक्षा के बीच संतुलन का प्रस्ताव करता है, अर्थात्, कि मसीह का आगमन निकट और शीघ्र था, और साथ ही देरी पर शिक्षा भी।

नए नियम में संकेत हैं कि मसीह के आगमन में कुछ समय के लिए देरी हो सकती है। चर्च इस तनाव के साथ जी रहा था, और आज हम भी इस तनाव के साथ जी रहे हैं, जो आसन्नता और देरी

के बीच का तनाव है। मसीह जल्द ही वापस आ सकता है, यह उन कथनों को दर्शाता है जो आपको सुसमाचारों और अन्य जगहों पर मसीह के जल्द वापस आने के बारे में मिलते हैं।

फिर भी, उसी समय, पूरे नए नियम में देरी के संकेत या संकेत सुझाते हैं कि मसीह शायद तुरंत वापस न आए या ज़रूरी नहीं कि वह तुरंत वापस आए। हो सकता है कि उसके लौटने में समय की कमी हो या देरी हो। इस मुद्दे से निपटने में कुछ और बातें जो मुझे लगता है कि महत्वपूर्ण हैं, वह यह समझना भी है कि जल्दी और आसन्नता पर जोर, कि मसीह तुरंत वापस आ सकता है, यहाँ तक कि अपने पाठकों के जीवनकाल में भी, अंत की भविष्यवाणी करने के उद्देश्य से नहीं था।

यीशु सिर्फ आधुनिक समय के भविष्यवाणी करने वाले उपदेशक नहीं थे, जो भविष्यवाणी करते थे, संकेतों को देखते थे और भविष्यवाणी करते थे कि अंत कब आएगा। मुझे लगता है कि बिना किसी अपवाद के, नए नियम में, सुसमाचार से लेकर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक तक, मसीह के शीघ्र आगमन या मसीह के शीघ्र आगमन पर जोर हमेशा पवित्र जीवन जीने की प्रेरणा के संदर्भ में है। मसीह के शीघ्र आगमन पर जोर पाठकों के जीवन में पवित्रता और पवित्रीकरण और प्रतिक्रिया लाने के लिए था।

अंत की भविष्यवाणी करना या यह निर्धारित करना कि वे अंत के कितने करीब हैं या अंत कितनी जल्दी होगा, यह नहीं। मुझे लगता है कि दूसरी कुंजी यह समझना है कि मत्ती से लेकर प्रकाशितवाक्य तक, नए नियम के लेखक, यीशु से शुरू करते हुए, उनकी अपनी शिक्षाओं से, नए नियम के लेखकों ने सोचा कि वे पहले से ही अंत में रह रहे थे। कि मसीह का पहला आगमन, अंतिम समय का राज्य, जिसका वादा और भविष्यवाणी पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने की थी, मसीह के पहले आगमन के साथ ही शुरू हो चुका था।

यीशु का पहला आगमन, उनकी मृत्यु और उनके पुनरुत्थान ने पहले से ही अंत समय का उद्घाटन कर दिया था। इसलिए नए नियम के लेखक तकनीकी रूप से अंत का इंतजार नहीं करते। वे अंत की आशा नहीं कर रहे हैं, वे पहले से ही अंत में जी रहे हैं।

वे बस अंतिम परिणति का इंतज़ार कर रहे हैं, वे अंतिम समय के समापन का इंतज़ार कर रहे हैं, जिसमें वे पहले से ही रह रहे हैं। और मुझे लगता है कि कुंजी उन सभी को संश्लेषित करना और एक साथ रखना है। अब, हम इस व्याख्यान के बाकी हिस्सों में और अगले व्याख्यानों में जो करने जा रहे हैं, वह इनमें से कुछ अंशों को देखना और उनका पता लगाना है, उन सभी को नहीं, बल्कि प्रमुख अंशों को, जिनमें से कई का हमने पहले उल्लेख किया था, जो पहली सदी के पाठकों के अपने जीवन, जीवनकाल में मसीह की जल्द वापसी की भविष्यवाणी या अनुमान लगाते प्रतीत होते हैं, फिर भी ऐसा नहीं हुआ।

उन पाठों को कुछ विस्तार से देखें और इस बारे में स्पष्टीकरण दें कि हम उन्हें परमेश्वर के आधिकारिक वचन के रूप में पवित्रशास्त्र की समझ के साथ कैसे जोड़ सकते हैं। उन्हें ऐसे परमेश्वर के साथ जोड़िए जो सच बोलता है और झूठ नहीं बोलता, एक परमेश्वर जो संप्रभु है, एक मसीह जो स्वयं परमेश्वर है, एक परमेश्वर जो शुरू से अंत तक सब कुछ जानता है। यह इन जैसे

पाठों के साथ कैसे मेल खाता है? तो, इस समय के बाकी हिस्सों में, हम इनमें से कुछ नए नियम के पाठों को देखेंगे, उन्हें थोड़े विस्तार से खोलेंगे, और उनकी शिक्षाओं को संश्लेषित करने का प्रयास करेंगे क्योंकि यह पारुसिया की देरी के इस मुद्दे से संबंधित है और यह पवित्रशास्त्र की विश्वसनीयता, पवित्रशास्त्र की विश्वसनीयता, स्वयं यीशु और परमेश्वर के अपने चरित्र की विश्वसनीयता और यीशु के अनुयायियों और उनके प्रेरितों की शिक्षाओं की विश्वसनीयता के बारे में क्या कहता है।

इससे पहले कि हम सुसमाचारों को देखना शुरू करें, मैं बस कुछ धारणाओं और शब्दावली पर कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ। सबसे पहले, मैं मान लूँगा कि नए नियम की पुस्तकें वास्तव में उन लेखकों द्वारा लिखी गई हैं जो उन्हें लिखने का दावा करते हैं। मैं कुछ नए नियम की पुस्तकों को जानता हूँ, कुछ नए नियम के विद्वानों द्वारा यह अस्वीकार करना आम बात है कि पतरस ने 2 पतरस लिखा था या पौलुस ने कुछ पत्र लिखे थे जिनसे उसका नाम जुड़ा हुआ है।

लेकिन मैं बार-बार तर्क दिए बिना या उल्लेख किए बिना मान लूँगा कि पॉल ने वास्तव में उन सभी पत्रों को लिखा था जिनका श्रेय उन्हें दिया जाता है, कि पीटर और जॉन और जिन लोगों की पुस्तकों का श्रेय उनके नाम को दिया जाता है, वास्तव में वे ही लेखक हैं जिन्होंने उन्हें लिखा है। गॉस्पेल, मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और जॉन, तकनीकी रूप से दस्तावेजों में उनके साथ जुड़े नामों के साथ नहीं आते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि एक अच्छा मामला बनाया जा सकता है कि प्रारंभिक ईसाई धर्म के शुरुआती चर्च परंपरा के रूप में प्रारंभिक प्रमाण कि उन गॉस्पेल को किसने लिखा है, विश्वसनीय है।

और इसलिए मैं इस धारणा के साथ काम करूँगा कि इन पुस्तकों से जुड़े लेखकों के पारंपरिक नाम, चाहे वे दस्तावेजों में हों या चर्च की परंपरा के अनुसार, इन पुस्तकों के लेखकत्व का सही दृष्टिकोण है। दूसरा, जहाँ तक शब्दावली का सवाल है, शब्द पारुसिया है। मैं अक्सर पारुसिया या मसीह के आने या उनके दूसरे आगमन शब्द का उपयोग करूँगा।

कभी-कभी मैं इसे मसीह के पहले आगमन से अलग कर दूँगा, जो स्पष्ट रूप से तब था जब वह जन्म लेने, अवतार लेने, मरने और फिर से जी उठने के लिए आया था। लेकिन मैं दूसरे आगमन, पारुसिया और मसीह के आगमन शब्दों का समानार्थी रूप से उपयोग करूँगा। पारुसिया शब्द ग्रीक शब्द से आया है जिसका अर्थ है उपस्थिति या आगमन।

और यद्यपि पहली शताब्दी के यूनानी में इसका सामान्य अर्थ था, नए नियम के लेखक इसका उपयोग विशेष रूप से इतिहास के अंत में यीशु मसीह के आने या प्रकट होने या आगमन के लिए करते हैं, ताकि इतिहास को समाप्त किया जा सके और न्याय लाया जा सके और उद्धार लाया जा सके। फिर से, व्यवस्थित धर्मशास्त्री आमतौर पर इसे उनके दूसरे आगमन के रूप में संदर्भित करते हैं। इसलिए, मैं पारुसिया, मसीह का आगमन, दूसरे आगमन शब्द का समानार्थी रूप से या एक ही घटना को संदर्भित करने के लिए उपयोग करूँगा।

मसीह का आगमन इतिहास के अंत में दूसरा आगमन है। एक और धारणा जिसे मैंने पहले ही संबोधित किया है, वह यह है कि मैं दूसरे आगमन और उत्साह के बीच अंतर नहीं करता,

हालाँकि यह शास्त्रीय व्यवस्थावादी दृष्टिकोण और अन्य लोगों के साथ आम है जो कि व्यवस्थावाद के स्कूल में आते हैं। यहाँ तक कि बहुत से लोकप्रिय ईसाई धर्म जो व्यवस्थावाद से अवगत नहीं हैं, अक्सर चर्च के उत्साह के बीच अंतर करते हैं, जहाँ मसीह हमें पकड़ लेंगे, और फिर बाद में, मसीह का दूसरा आगमन अपने राज्य का उद्घाटन करने के लिए।

फिर से, मैं यह भेद नहीं करूँगा। मुझे लगता है कि 1 थिस्सलुनीकियों 4 से उत्थान, और मसीह का दूसरा आगमन एक ही घटना है, कि इतिहास के अंत में केवल एक ही आगमन है। तो ये कुछ ऐसी धारणाएँ हैं जिनके साथ मैं काम करूँगा और कुछ शब्दावली पर कुछ स्पष्टीकरण दूँगा।

तो चलिए सीधे सुसमाचार की ओर चलते हैं। मैं यीशु की कुछ बातों पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ। हमने उनमें से कुछ का उल्लेख पहले ही परिचय में कर दिया है।

यीशु की कुछ बातें यह संकेत देती हैं कि अंत निकट था, जो यह संकेत देती हैं कि यीशु मसीह पारूसिया, उनका दूसरा आगमन, तुरंत होने वाला था, यीशु के अपने जीवनकाल में भी, या उनके शिष्यों के जीवनकाल में। और शुरुआती बिंदु, मुझे लगता है, राज्य के आगमन के मुद्दे को देखना है। यीशु ने सुसमाचारों में कई जगहों पर सिखाया कि परमेश्वर का राज्य निकट था, कि परमेश्वर का राज्य दृश्य पर आने वाला था।

अब यह समझना महत्वपूर्ण है कि जब यीशु ने परमेश्वर के राज्य की पेशकश की तो वह क्या पेशकश कर रहा था। राज्य क्या था? फिर से, आपको वह शब्दावली मिलती है, परमेश्वर का राज्य, स्वर्ग का राज्य। और वैसे, यहाँ एक और शब्दावली स्पष्टीकरण यह है कि मैं परमेश्वर के राज्य और स्वर्ग के राज्य के बीच अंतर नहीं करता।

मुझे लगता है कि वे दोनों बिल्कुल एक ही बात का जिक्र कर रहे हैं, हालाँकि कुछ लोगों ने उन दोनों में अंतर किया है। इसका एक कारण यह है कि आप एक सुसमाचार में यीशु को परमेश्वर के राज्य के बारे में बात करते हुए देखते हैं, जबकि दूसरे सुसमाचार में ठीक उसी जगह, ठीक उसी घटना के साथ, यीशु की ठीक उसी बात में स्वर्ग के राज्य के बारे में कहा गया है। निश्चित रूप से, वे दोनों दो अलग-अलग राज्य नहीं थे।

तो, जब यीशु ने परमेश्वर के राज्य या स्वर्ग के राज्य की पेशकश की तो उसका क्या मतलब था? सबसे पहले, यह समझना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर का राज्य कोई स्थान नहीं है। यह कोई जगह या भौगोलिक क्षेत्र नहीं है। आज, हम स्वर्ग के राज्य या किसी अन्य देश के बारे में सोचते हैं जो खुद को एक राज्य कहता है।

परमेश्वर का राज्य कोई भौगोलिक क्षेत्र नहीं था। ऐसा नहीं है कि इसका पृथ्वी से कोई संबंध नहीं था, लेकिन यह मुख्य रूप से फिलिस्तीन की भूमि जैसे भौगोलिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं था। साथ ही, परमेश्वर का राज्य कोई समय अवधि नहीं है।

यह मुख्य रूप से भविष्य में समय की अवधि को संदर्भित नहीं करता है, जैसे कि सहस्राब्दी राज्य, जैसा कि कुछ लोग इसे सीमित करना चाहते हैं। परमेश्वर का राज्य मुख्य रूप से वर्तमान

या भविष्य में किसी समय अवधि को संदर्भित नहीं करता है। तो, राज्य क्या था? मूल रूप से, परमेश्वर का राज्य शब्द परमेश्वर के संप्रभु शासन, उसकी राजसी शक्ति को संदर्भित करता है।

यह जॉर्ज एल्डन लैड के विचार से अधिक था, जो कई वर्षों पहले एक प्रसिद्ध न्यू टेस्टामेंट धर्मशास्त्री थे, जिन्होंने इस दृष्टिकोण को लोकप्रिय बनाया कि परमेश्वर का राज्य परमेश्वर के राजसी शासन, उसकी शक्ति, उसकी राजसी शक्ति को संदर्भित करता है। यह शासन करने के गतिशील कार्य को संदर्भित करता है। मैथ्यू अध्याय 6 में प्रभु की प्रार्थना में, यीशु अपने शिष्यों से कहते हैं, यह प्रार्थना करो, हे हमारे पिता, जो स्वर्ग में हैं, आपका नाम पवित्र माना जाए।

तुम्हारा राज्य आएगा, तुम पृथ्वी पर वैसे ही रहोगे जैसे स्वर्ग में। अर्थात्, परमेश्वर का राज्य मूलतः उसकी इच्छा पूरी होना है। यह परमेश्वर का राजसी शासन है, सभी चीज़ों पर उसका शासन है।

इसलिए, यह मुख्य रूप से समय की अवधि को संदर्भित नहीं कर रहा है। यह मुख्य रूप से किसी स्थान, भौगोलिक क्षेत्र को संदर्भित नहीं कर रहा है। यह गतिशील रूप से परमेश्वर के शासन, उसके शासन, उसकी राजसी शक्ति को संदर्भित कर रहा है जिसका प्रयोग वह लोगों और पृथ्वी पर करेगा।

परमेश्वर के राज्य की धारणा पुराने नियम में वापस चली जाती है। तो, जब यीशु परमेश्वर के राज्य की घोषणा करने आता है, तो उसे यह कहाँ से मिलता है? वह क्या पेश कर रहा है, और उसके पाठक क्या समझेंगे? दिलचस्प बात यह है कि यीशु बैठकर यह नहीं कहता कि, अब परमेश्वर का राज्य निकट है। मैं आपको बताता हूँ कि इसका क्या मतलब है।

यीशु मानते हैं कि उनके पाठक काफी हद तक समझ जाएँगे कि वे क्या पेशकश कर रहे हैं। और जाने का स्थान पुराना नियम है। पुराना नियम आने वाले राज्य की आशा करता है, एक ऐसा समय जब परमेश्वर सारी सृष्टि पर शासन करेगा, जहाँ परमेश्वर का शासन सारी पृथ्वी पर फैल जाएगा, जहाँ वह सभी राष्ट्रों पर शासन करेगा, वह अपने लोगों को उद्धार प्रदान करेगा, वह राष्ट्रों का न्याय करेगा, उसके शत्रुओं को पराजित किया जाएगा, दाऊद की वंशावली में से एक राजा, एक मसीहा सिंहासन पर बैठेगा और अपने लोगों पर शासन करेगा, इस्राएल को पुनर्स्थापित किया जाएगा, मसीहा उन पर शासन करेगा, परमेश्वर उनके साथ एक नई वाचा स्थापित करेगा और उनके बीच निवास करेगा।

यह वह राज्य था जिसकी पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने आशा की थी। आप इसे यहजेकेल अध्याय 36 और 37 जैसे ग्रंथों में पढ़ सकते हैं, लेकिन सबसे बढ़कर, पुराने नियम की भविष्यवाणियाँ परमेश्वर के आने वाले राज्य की आशा करती हैं, जिसमें परमेश्वर के ये घटक सभी लोगों पर, पूरी सृष्टि पर, दाऊद की वंशावली में अपने मसीहा के माध्यम से, अपने पुनर्स्थापित लोगों, इस्राएल पर, उनके शत्रुओं को पराजित करके और उनके साथ एक नई वाचा का संबंध स्थापित करके शासन करेंगे। यह वह राज्य था जिसका पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने वादा किया था, और यह वह राज्य था, संभवतः, तब यीशु ने पेशकश की थी।

लेकिन फिर से, समस्या का एक हिस्सा यह है कि यह राज्य आता हुआ नहीं लग रहा था। मार्क अध्याय 1 और पद 15, मैथ्यू अध्याय 4 और पद 17, और ल्यूक 4 पद 43 से जो पाठ हम पढ़ते हैं, वे वे पाठ हैं जो यीशु की वयस्क सेवकाई की शुरुआत करते हैं और ऐसा लगता है कि यह यीशु की शिक्षा है। यह यीशु की शिक्षा का बोझ है, कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं द्वारा वादा किया गया परमेश्वर का राज्य अब निकट है। हम कैसे समझ सकते हैं कि चूंकि वह राज्य अभी तक नहीं आया है, यह पहली शताब्दी में नहीं आया था, और जाहिर तौर पर 2,000 साल बाद भी, यह अभी भी नहीं आया है? क्योंकि क्या यीशु ने नहीं कहा कि समय निकट है? पूर्ति का समय निकट है।

पश्चात्ताप करो क्योंकि परमेश्वर का राज्य निकट है। पुराने नियम में जिस राज्य का वादा किया गया था, वह निकट है। फिर भी, किस अर्थ में राज्य निकट था? किस अर्थ में यीशु परमेश्वर के इस राज्य की निकटता की घोषणा कर रहे थे जिसकी भविष्यवाणी पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने की थी? फिर से, यह जॉर्ज एल्डन लैड ही थे जिन्होंने मुझे लगता है कि इस मुद्दे को हल किया, कम से कम एक लोकप्रिय स्तर पर।

कुछ लोगों ने इन ग्रंथों को यह कहने के लिए लिया है कि, ठीक है, यीशु गलत थे; वह राज्य नहीं आया। यीशु ने सोचा कि वह भविष्यवक्ताओं द्वारा भविष्यवाणी किए गए अंतिम समय के राज्य की शुरुआत करने जा रहा है, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ। यीशु बस गलत थे।

लेकिन जॉर्ज एल्डन लैड ने इस अवधारणा को पेश किया जो लगभग एक क्लिच बन गई है लेकिन अभी भी बहुत सच है, और वह है पहले से ही और अभी तक नहीं की अवधारणा। कि यीशु ने वास्तव में परमेश्वर के राज्य की पेशकश की और यह वास्तव में पहले से ही मौजूद था। लेकिन इसका उद्घाटन केवल प्रारंभिक आंशिक रूप में भविष्य के दिन से पहले किया गया था जब मसीह वापस आएंगे, एक दिन जिसे हम दूसरे आगमन के साथ जोड़ते हैं, एक दिन जब वह आएंगे, अभी तक नहीं जब वह आएंगे और राज्य को उसकी पूर्णता में लाएंगे।

तो, समाधान तब है जब यीशु कहते हैं कि परमेश्वर का राज्य निकट है। इनमें से कुछ ग्रंथों में, सभी में नहीं, ऐसे अन्य ग्रंथ हैं जिनसे हमें निपटना है, लेकिन कम से कम यीशु के मंत्रालय की शुरुआत में ये ग्रंथ और नए नियम में कई अन्य ग्रंथ हैं जहाँ यीशु सुझाव देते हैं कि राज्य निकट है, पुरुष और महिलाएँ अब इसमें प्रवेश कर सकते हैं। यीशु सच बोल रहे थे। राज्य वास्तव में निकट था।

यह वास्तव में मौजूद था, लेकिन अपने अंतिम रूप में नहीं, अपने आंशिक उद्घाटन रूप में। मैथ्यू, मार्क, ल्यूक और मैं सुझाव देंगे कि नए नियम के बाकी सभी लोग इस बात पर सहमत हैं कि पुराने नियम में भविष्यवाणी की गई परमेश्वर का भविष्य का राज्य पहले से ही एक वास्तविकता थी। इसका उद्घाटन पहले ही हो चुका था।

पुरुष और महिलाएँ पहले से ही शासन में प्रवेश कर सकते हैं। याद रखें, यह समय की अवधि नहीं है। यह कोई भौगोलिक क्षेत्र नहीं है।

यह शासन है, परमेश्वर का राजसी शासन, उसके मसीहा यीशु मसीह के माध्यम से। यीशु मसीह, वह मसीहा अब मौजूद है, और वह पहले से ही उस राज्य की पेशकश कर रहा है। पुरुष और महिलाएँ पहले से ही उस राज्य में प्रवेश कर सकते हैं और भविष्य में उसके अंतिम प्रकटीकरण से पहले, एक दिन उसके दूसरे आगमन पर, उसके आशीर्वाद का अनुभव कर सकते हैं।

मसीह का पहला आगमन, उनका जन्म, उनके चमत्कार, उनकी सेवकाई, उनकी शिक्षा, उनकी मृत्यु और उनके पुनरुत्थान ने राज्य का उद्घाटन किया, इसे गति प्रदान की। यह पहले से ही पूरा हो रहा था। पुरुष और महिलाएँ पहले से ही आशीर्वाद का अनुभव कर सकते थे।

लेकिन एक दिन ऐसा आएगा जब यह अपनी पूर्णता, पूर्णता और अंतिमता में आएगा। यह अभी तक नहीं हुआ हिस्सा है। इसलिए, मुझे लगता है कि हमें परमेश्वर के राज्य के बारे में यीशु की शिक्षा को इसी तरह समझना चाहिए।

कम से कम बहुत से पाठ ऐसे हैं, जिनमें से सभी नहीं, कुछ और भी हैं जिन्हें हमें देखना होगा, लेकिन बहुत से पाठ ऐसे हैं जैसे कि यीशु की सेवकाई की शुरुआत में जब उसने कहा कि समय पूरा हो रहा है। परमेश्वर का राज्य निकट है। पुरुष और महिलाएँ अब उसमें प्रवेश कर सकते हैं।

बाद में मत्ती अध्याय 12 में, यीशु कहेंगे, यदि मैं शैतान के नाम से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे ऊपर आ गया है। या यदि मैं शैतान के नाम से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो वह कहता है, वह उन्हें किसके अधिकार से निकालता है? लेकिन यदि मैं परमेश्वर की आत्मा से दुष्टात्माओं को निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे ऊपर आ गया है। परमेश्वर की आत्मा की शक्ति से दुष्टात्माओं को निकालने के द्वारा, और वैसे, पवित्र आत्मा की उपस्थिति, नए नियम का हिस्सा थी, पुराने नियम के लेखकों द्वारा वादा किए गए परमेश्वर के राज्य का हिस्सा थी।

शैतान को हराने, दुष्टात्माओं को निकालने के लिए यीशु की सेवकाई में आत्मा की उपस्थिति के साथ, पुराने नियम में वादा किए गए मसीह के राज्य, परमेश्वर का राज्य पहले से ही शैतान के राज्य पर आक्रमण कर रहा था। यह यीशु द्वारा दुष्टात्माओं को निकालने से प्रदर्शित हुआ। इसलिए, इन ग्रंथों से यह निष्कर्ष निकालने की कोई आवश्यकता नहीं है कि परमेश्वर का राज्य पहले से ही मौजूद है।

यीशु एक ऐसे राज्य की पेशकश कर रहे थे जो किसी अर्थ में पहले से ही निकट था। यह निष्कर्ष निकालना आवश्यक नहीं है कि यीशु ने एक ऐसे राज्य का वादा किया था जो कभी साकार नहीं हुआ, और इसलिए, वह गलत था। नहीं, राज्य साकार हुआ।

यह मौजूद था। यह एक वास्तविकता थी। लेकिन अपने अंतिम परिपूर्ण रूप में नहीं।

इसका उद्घाटन और क्रियान्वयन केवल आंशिक रूप से उस दिन से पहले और उस दिन की प्रत्याशा में किया गया था जब यह अपनी पूर्णता और पूर्णता में आएगा। यह समझने के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणा है क्योंकि, नंबर एक, जैसा कि मैंने कहा, मुझे लगता है कि बाकी

सभी नए नियम के लेखक इसे मानते हैं। लेकिन नंबर दो, जैसा कि हम पहले ही कह चुके हैं, यह इस विचार के कारण है कि नए नियम के लेखकों ने सोचा कि वे पहले से ही अंत में रह रहे थे।

और विचार से मेरा मतलब यह नहीं है कि उन्हें लगा कि वे थे, बल्कि वे वास्तव में थे। लेकिन यह यीशु की इस शिक्षा पर आधारित था कि परमेश्वर का राज्य पहले से ही निकट था। कि नए नियम के लेखक आश्चर्य थे कि अंत पहले ही आ चुका था।

वे अंत आने का इंतज़ार नहीं कर रहे थे। वे पहले से ही अंत में थे। बस इसकी पूर्णता और मसीह के दूसरे आगमन पर इसके समापन की प्रतीक्षा कर रहे थे।

अगले व्याख्यान में, हम सुसमाचारों और यीशु की शिक्षाओं के कुछ अन्य पाठों पर विचार करेंगे जो मसीह के आने या आने वाले राज्य, अंत समय, अंत समय के राज्य, मसीह के दूसरे आगमन को पारुसिया के रूप में, शिष्यों के जीवनकाल के भीतर इंगित करते हैं। जैसे कि जब यीशु कहते हैं, यहाँ खड़े तुम में से कुछ लोग तब तक नहीं मरेंगे जब तक तुम राज्य को उसकी पूर्णता में आते नहीं देखते। या, यह पीढ़ी तब तक नहीं गुजरेगी जब तक ये सभी चीजें नहीं हो जातीं।

हम ऐसे ग्रंथों को कैसे समझते हैं? खैर, हम अगले व्याख्यान में उन ग्रंथों की थोड़ी विस्तार से जाँच करेंगे।

यह डॉ. डेविड मैथ्यूसन द्वारा उनके शिक्षण में है, जहाँ उनका आगमन हो रहा है? सत्र 1, पारुसिया की समस्या, देरी और संभावित समाधान।